श्री हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय
वाराणसी

(सम्बद्ध : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर)

पत्रांक : दिनांक :

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **शिवानी श्रीनेत** ने **"आतंकवाद की समस्या एवं समाधान (एशिया के विशेष सन्दर्भ में)"** विषय पर मेरे निर्देशन में शोध कार्य किया है। इन्होंने वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर द्वारा निर्धारित सभी नियमों एवं शर्तों का पालन किया है। यह शोध–प्रबन्ध इनके मौलिक चिन्तन एवं अध्ययन का परिणाम है। मैं इसे डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी–एच0डी0) उपाधि हेतु परीक्षण के लिए अग्रसारित करता हूँ।

अग्रसारित

13/9/12

(डॉ0 पंकज कुमार सिंह)
शोध निर्देशक
विभागाध्यक्ष एवं उपाचार्य
राजनीतिशास्त्र विभाग

(डॉ0 विजयी राम यादव)
प्राचार्य
प्राचार्य
हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय
वाराणसी।

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रम			
प्रमाण–पत्र			
प्राक्कथन			i-iii
आभार			iv-vi

अध्याय		विवरण	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	:	प्रस्तावना	1–121
		(1) आतंकवाद : अर्थ, परिभाषा	1–45
		(2) आतंकवाद का अभ्युदय	46–121
द्वितीय अध्याय	:	आतंकवाद के प्रमुख कारण	122–149
तृतीय अध्याय	:	एशिया के विभिन्न देशों के संदर्भ में आतंकवाद	150–258
चतुर्थ अध्याय	:	एशिया की राजनीति पर आतंकवाद का प्रभाव	259–288
पंचम अध्याय	:	निष्कर्ष एवं सुझाव	289–320
		उपसंहार	321–351
परिशिष्ट	:	एशिया का मानचित्र	
		संदर्भ ग्रंथ सूची	i-xii

●

प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध प्रबंध में 21वीं सदी के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आतंकवाद के वैश्विक स्वरूप का विश्लेषण करते हुये, विशेष रूप से एशियाई क्षेत्र में आतंकवाद की चुनौतियों एवं सम्भावित समाधानों का तथ्य परक विश्लेषण किया गया है। एशिया आकार और जनंसख्या दोनों ही दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। पश्चिम में इसकी सीमाये यूरोप से मिलती है। एशिया और यूरोप को मिलाकार कभी–कभी यूरेशिया भी कहा जाता है। एशिया महाद्वीप, भूमध्य सागर, अंध सागर आर्कटिक महासागर, प्रशान्त महासागर और हिन्द महासागर से घिरा हुआ है। कॉकस पर्वत श्रृंखला और यूराल पर्वत प्राकृतिक रूप से एशिया को यूरोप से अलग करते है। चीन और भारत विश्व के दो सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश है। एशिया सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्व होने के कारण प्रारम्भ से ही महाशक्तियों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। शीत युद्ध के परिस्थितियों में हिन्द महासागर में बड़ी शक्तियों की सैन्य प्रतिस्पर्धा ने महाशक्तियों को इस क्षेत्र के प्रति आकर्षित किया। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के पश्चात् साम्प्रदायिक आधार पर भारत के विभाजन के फलस्वरूप अस्तित्व में आये। पाकिस्तान के अंदर विद्यमान असुरक्षा के भाव ने शीतयुद्धोत्तर शक्तियों को एशियाई क्षेत्र में प्रवेश का अवसर उपलब्ध कराया। एशियाई क्षेत्र के शांति एवं स्थिरता काफी सीमा तक इस क्षेत्र के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रों–भारत एवं पाकिस्तान, के पारस्परिक सम्बन्धों पर निर्भर रही है। परन्तु प्रारम्भ से ही इनके आपसी सम्बन्ध कटुतापूर्ण रहे हैं, जिसने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। 2001 में अमेरिका के विरूद्ध आतंकवादी कार्यवाही ने आतंकवाद को विश्वव्यापी समस्या का स्वरूप प्रदान कर दिया। इसके पूर्व अमेरिकी पर्यवेक्षक यह मान रहे थे कि आतंकवाद एक ऐसी समस्या हैं, जिससे विश्व के अन्य राष्ट्र तो प्रभावित हैं, परन्तु अमेरिका पूर्ण युक्त है। परन्तु अमेरिका के विरूद्ध दुस्साहसिक कार्यवाही ने अमेरिकी विश्लेषको को इस समस्या पर विचार करने के लिये बाध्य किया।

परिवर्तित परिदृश्य मे आतंकवाद को एक वैश्विक समस्या के रूप में प्रचारित किया गया। आतंकवाद का वैश्विक स्वरूप इस एशियाई स्वरूप से काफी भिन्न रहा है। विश्व के अन्य भागों में संचालित आतंकवादी गतिविधियों में आतंकवादी वहाँ की सामाजिक संरचना से घुले–मिले नहीं है। अतः उनकी पहचान करना अत्यन्त सुगम है। उन्हें आसानी से समाज से अलग किया जा सकता है। परन्तु एशियाई क्षेत्र में आतंकवादी यहाँ की सामाजिक व्यवस्था से इतने अधिक आबद्ध है कि उनकी पहचान कर पाना तथा उन्हे अलग कर पाना चुनौती बनी हुयी है। यद्यपि विश्व के विभिन्न भागों में व्याप्त तथा अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिये खतरा बन चुकी आतंकवाद की समस्या पर अनेक दृष्टिकोण से तथ्यपरक अध्ययन किया जा चुका है, फिर भी 21वीं सदी की वर्तमान परिस्थितियों मे विशेषतया एशिया के परिपेक्ष्य में आतंकवाद की समस्या एवं समाधान का विश्लेषण अभी तक समग्रता पूर्वक नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध इस दिशा में किया गया एक प्रयास है।

शोध प्रबंध में कुल पांच अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है–

प्रथम अध्याय– "प्रस्तावना" है। इस अध्याय को भी दो भागों में विभाजित किया गया है। **पहला भाग–आतंकवादः अर्थ एवं परिभाषा** हैं, एवं **दूसरा भाग–आतंकवाद का अभ्युदय** है। इस अध्याय में आतंकवाद के प्रचलित अनेक अर्थों के साथ ही आतंकवाद की परिभाषाओं का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। इसके साथ ही साथ आतंकवाद के अभ्युदय के विभिन्न चरणों पर की क्रमवार प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय आध्याय–

"आतंकवाद के प्रमुख कारण" है। इसके अन्तर्गत आतंकवाद के धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक कारणों की विस्तार से चर्चा की गयी है। और इन कारणों की जड़ों पर भी प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय–

"एशिया के विभिन्न देशों के संदर्भ में आतंकवाद" में एशिया के अनेक देश उदाहरणार्थ, भारत, पाकिस्तान, बाग्लादेश, अफगानिस्तान, इजराइल, फिलीस्तीन आदि देशों में आतंकवाद की स्थिति की चर्चा की गयी हैं और किस देश में कौन–कौन से

आतंकवादी संगठन सक्रिय है और हाल में हुये आतंकवादी घटनाओं की भी जानकारी दी गयी है।

चतुर्थ अध्याय–

"एशिया की राजनीति पर आतंकवाद का प्रभाव" है। इस अध्याय में एशियाई देशों की राजनीति पर आतंकवाद के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान की गयी है। ताकि इन प्रभावों से पड़ने वाले दुष्परिणामों से आने वाले समय मे इसके समाधान के लिये समुचित रणनीति के तहत कार्यकारी योजना बनायी जा सके। और इसके अन्तर्गत भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बाग्लांदेश, अफगानिस्तान, में आतंकवाद की विीिषिका तथा तद्जनित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं मानवीय क्षेत्रों पर पड़ने वाले दुष्परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। आतंकवाद ने किस तरह से एशिया के देशों के आपसी राजनैतिक सम्बन्धों को दूषित किया है और आंतरिक अवनति की ओर उन्हें अग्रसर कर रहा है, इसका भी तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय–

"निष्कर्ष एवं सुझाव" है। जिसके तहत् आतंकवाद के विविध पहलुओं के विश्लेषण के आधार पर इसके सम–सामयिक स्थिति को उजागर करते हुए प्रमुख चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है। इस चुनौतियों को एशिया ईमानदारी से स्वीकार करके इसके समाधान की ओर अग्रसर होगा, तो आतंकवाद से निजात पा सकता है, इस तथ्य को पंचम अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय प्रथम से अध्याय पंचम तक में प्रस्तुत तथ्यों के सार को **"उपसंहार"** में रखा गया है। उपर्यकित अध्यायों में प्रत्येक स्तर पर राजनीति विज्ञान के तथ्यों, अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों के सीमाओं का यथासम्भव अनुपालन किया गया है तथा इसी के संदर्भ में व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है।

अतंतः जिन प्राथमिक स्त्रोतों, पुस्तकों, शोध–पत्रों, पत्रिकाओं, पत्रों, सरकारी/गैर सरकारी अभिलेखों से शोध–सामग्री को प्राप्त किया गया है। उसे संदर्भ ग्रन्थ–सूची में प्रस्तुत किया गया है।

●

आभारोक्ति

'आतंकवाद' विश्व समुदाय के समक्ष 21वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया हैं इससे विश्व के कमोबेश सभी राष्ट्र प्रभावित हैं। आतंकवाद महाशक्तियों– अमेरिका एवं रूस, तक को भारी धन–जन की क्षति पहुँचा रहा है। आधुनिक आतंकवाद एक **"नियोजित संगठन"** (Planned Organization) के रूप में व्यवस्थित हो गया है और इससे समाज का उच्च बौद्धिक वर्ग राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी, उद्योगपति येन–केन–प्रकारणेन सम्बद्ध हो गये हैं। आज आतंकवादी अत्याधुनिक हथियारों, संचार के विकसित साधनों, युद्ध के कुशल प्रशिक्षकों, प्रचार के विविध संसाधनों इत्यादि का सोची–समझी सुनियोजित योजना के तहत् उपयोग कर रहे हैं। इन दृष्टियों से आज आतंकवाद विश्व की सर्वाधिक गम्भीर समस्याओं में सम्मिलित हो गया है। ऐसी स्थिति में समाज वैज्ञानिकों का इसके प्रति दायित्व और बढ़ जाता है कि वह इसके जड़ तक पहुँचे ताकि निराकरण के कारगर उपायों को प्रस्तुत कर सकें। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध इसी दिशा में एक लघु प्रयास मात्र है।

प्रस्तुत शोध कार्य में अनेक गुरूजन एवं बड़ों का आशीर्वाद, विज्ञ जनों का मार्गदर्शन एवं आत्मीय लोगों का भावात्मक प्रोत्साहन मुझे प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को आकार रूप देने में हमें जिन पुस्तकालयों का सहारा लेना पड़ा एवं प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से शोध के कार्यकाल में जिनसे मेरा उत्साहवर्धन होता रहा, उनके प्रति मैं अपनी आत्मीय अनुभूति को व्यक्त करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझती हूँ।

इस प्रयास को मूर्त रूप तक देने में मेरी सहायता करने के लिए मैं सर्वप्रथम अपने **शोध–निर्देशक डॉ0 पंकज कुमार सिंह, उपाचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0)** के प्रति अत्यधिक आभार प्रकट करती हूँ जिनके सहयोग, मार्गदर्शन एवं सहज स्वभाव ने हमारे इस कठिन

कार्य को आसान बना दिया। इस शोध ग्रंथ को पूरा करने के लिये आदरणीय गुरुजी ने जो निर्देश तथा सहयोग दिया, उसकी प्रशंसा न तो हमारे सामर्थ्य की बात है और न ही उसे शब्दों में बांधा जा सकता है। अतः मैं सदैव उनकी हृदय से कृतज्ञ रहूँगी।

इसके साथ ही मैं अपने कालेज श्री हरिश्चन्द्र पी0जी0 कालेज के प्रधानाचार्य **डॉ0 विजयी राम यादव** एवं राजनीतिशास्त्र विभाग के आदरणीय गुरुजनों **डॉ0 अनुपम शाही, डॉ0 सुधाकर सिंह एवं डॉ0 उमेश राय** का भी धन्यवाद करना चाहती हूँ।

मैं **डॉ0 श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी**, आचार्य राजनीतिशास्त्र विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं **डॉ0 राजेश सिंह** विभागाध्यक्ष राजनीतिशास्त्र विभाग, आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग, गोरखपुर का आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने हमें यह कार्य करने के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त मैं **डॉ0 पी0के0 सिंह कौशिक** डीलिंग क्लर्क राजनीतिशास्त्र विभाग पूर्वांचल विश्वविद्यालय का आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने हमें इस शोध कार्य को करने के लिये समय निकाल कर हमारी समस्याओं के समाधान हेतु हमारी सहायता की। इसी तारतम्य में मैं काशी हिन्दी विश्वविद्यालय की **आचार्या डॉ0 शुभा राव** एवं **डॉ0 टी0पी0 सिंह** उप आचार्य के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनके प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन के बिना शोध–कार्य को पूर्ण करना एक दुरुह कार्य होता।

इसके साथ ही मैं अपने चाचा **डॉ0 धीरेन्द्र सिंह,** प्रवक्ता, उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज एवं मामा **राघवेन्द्र प्रताप सिंह** का आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोध–कार्य को पूरा करने में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया और मुझे प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त मैं I.D.S.A. संस्थान (दिल्ली), श्री हरिश्चन्द्र पी0जी0 कालेज (वाराणसी), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (वाराणसी) पूर्वांचल विश्वविद्यालय (जौनपुर) के पुस्तकालय के कर्मचारियों का धन्यवाद करना चाहती हूँ, जिसके उत्कृष्ट पुस्तकालय के द्वारा मुझे अच्छी किताबों के संग्रह को देखने और अध्ययन करने का अवसर मिला।

मैं अपने चाचा **स्व0 अखण्ड प्रताप सिंह** की व्यक्तिगत रूप से आभारी हूँ कि उनसे मुझे इस कार्य को करने की प्रेरणा प्राप्त हुयी थी।

अन्ततः मैं अपने परिवार जनों की सदैव ऋणी रहूँगी जिनके आशीर्वाद एवं प्रत्येक तरह के आत्मीयतापूर्ण सहयोग से मैं शोध कार्य में सदैव अग्रसर होती रही हूँ और उन लोगों ने विकट से विकट परिस्थितियों में भी मेरे धैर्य को टूटने नहीं दिया। इनमें सबसे पहले मैं अपने पति **श्री अमित चंदेल** के योगदान के लिए सदैव आभारी रहूँगी, जिन्होंने मेरा कदम–कदम पर साथ दिया और मेरे प्रेरणा स्त्रोत बनकर इस शोध कार्य को पूरा करने में हर तरह से सहयोग प्रदान किया। मैं अपने पिता **श्री प्रदीप कुमार सिंह** एवं माता **श्रीमती कृष्णा सिंह, श्वसुर श्री गोविन्द सिंह चंदेल एवं सास श्रीमती सुषमा चंदेल** और को हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनके स्नेहिल मातृत्व एवं प्रेरणादायक उच्च आदर्शों की शिक्षा व संस्कारों ने मुझे सदैव शोध–कार्य करने के लिए दृढ़ संकल्पता को प्रदान किया। इसके अतिरिक्त मैं अपने भाई **सिद्धार्थ श्रीनेत, जेठ रोहित चंदेल, जेठानी सपना चंदेल, नंद स्मृति चंदेल, चाचा विकास श्रीनेत** और अपनी भतीजी **आद्या सिंह** एवं **पुत्री यशसस्विनी सिंह** एवं मामी जी **श्रीमती अनीता सिंह** के योगदानों के प्रति भी सदैव आभारी रहूँगी।

मैं शोध प्रबन्ध के टंकणकर्त्ता– मुश्ताक अहमद 'मुश्ताक कम्प्यूटर' बी0एच0यू0, वाराणसी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने बड़ी तन्मयता से नियत समय में कम्प्यूटर द्वारा सुन्दर अक्षर–सज्जा एवं मुद्रण द्वारा इस कार्य को सम्पन्न किया।

दिनांक : ..... **(शिवानी श्रीनेत)**